

The Report of the Team is expected shortly.

A decision has also been taken that the Delhi Transport Undertaking should be replaced by a statutory Road Transport Corporation to be set up under the Road Transport Corporations Act 1950. The Road Transport Corporations (Amendments) Bill, 1966 was introduced in the Lok Sabha in August, 1966. With the dissolution of the Third Lok Sabha, the Bill has lapsed and the question of re-introducing this Bill in Parliament is now under consideration.

Replacement of I.A.C. Viscounts

1546. Shri Mohan Swarup:
Shri Yashpal Singh:
Shri Ram Kishan Gupta:
Shrimati Tarakeshwari Sinha:
Shri Yegendra Sharma:
Shri Chandra Shekhar Singh:

Will the Minister of Tourism and Civil Aviation be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a decision was taken sometime back for replacing Viscounts of the Indian Airlines Corporation;

(b) if so, the estimated cost thereof;

(c) whether it is also a fact that this decision has now been changed; and

(d) if so, the reason therefor?

The Minister of Tourism and Civil Aviation (Dr. Karan Singh): (a) to (d). The question whether the Viscount Aircraft in the fleet of the IAC should be replaced and, if so, by what type of aircraft, is under examination.

रबी की फसलों के मूल्य

1547. श्री मोहन स्वरूप :
श्री बी० चं० वर्मा :
श्री देवराज दादिल :
श्रीमती सारदा मुखर्जी :
श्री कमलनाथ राव बोधी :

श्री रवेल :

डा० कर्ण सिंह :

श्रीमती निर्मल कौर :

श्री किकर सिंह :

श्री बेरी :

श्री सोनवाई बिक्रमा :

क्या जासूद तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि गेहूँ उगाने वाले राज्यों को सरकार ने रबी की फसल के अनाज के मूल्य नियत करने के सम्बन्ध में कोई सिफारिश की है ;

(ख) यदि हां, तो क्या सिफारिशों की गई हैं; और

(ग) क्या इस सम्बन्ध में कोई अन्तिम निर्णय किया गया है ?

जासूद, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री धम्म-साहिब गिन्हे) : (क) से (ग). कृषि मूल्य आयोग की सिफारिशों का ध्यान में रखते हुये अप्रैल, 1967 में हुये मुख्य मंत्रियों के सम्मेलन में 1967-68 के सीजन में रबी फसल के अधिप्राप्ति मूल्यों पर विचार विमर्श हुआ था। सम्मेलन की सिफारिशों के अनुसार तथा संबंधित राज्य सरकारों के परामर्श से गेहूँ का जो अधिप्राप्ति मूल्य प्रमुख रूप से गेहूँ वेदा करने वाले राज्यों में निर्धारित किये गये हैं वे गत वर्ष की अपेक्षा अधिक हैं। प्रमुख रूप से गेहूँ वेदा करने वाले राज्यों में जो अधिप्राप्ति मूल्य निर्धारित किये गये हैं वे इस प्रकार हैं:-

₹ प्रति
क्विंटल

पंजाब और हरियाणा	
(का सीतल)	70—75
मध्य प्रदेश	65—77
राजस्थान	77—85
उत्तर प्रदेश	80—85

जहाँ तक घने का संबंध है, भारतीय खाद्य निगम राजस्थान, हरियाणा और पंजाब में उसकी अधिप्राप्ति/खरीदारी उचित मूल्य पर करेगा।

गन्ने का मूल्य

1542. श्री मोहन स्वरूप :
श्री मृत्युञ्जय प्रसाद :
श्री विश्वनाथ पाण्डेय :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या 1967-68 के आगामी गन्ना वेरने के मौसम में गन्ने का प्रति किबंटल मूल्य निर्धारित करने का प्रश्न विचाराधीन है; और

(ख) यदि हाँ, तो गन्ने का मूल्य कब तक निर्धारित किये जाने की संभावना है ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री अन्नासाहिब शिन्डे) : (क) और (ख) मरकार ने 2 मार्च, 1967 को यह घोषित किया था कि 1967-68 के मौसम के लिये गन्ने का मूल्य 9.4 प्रतिशत या इससे कम उपलब्धि पर रु. 5.68 प्रति किबंटल होगा। ज्यादा उपलब्धि होने पर अधिक मूल्य देने की भी व्यवस्था है। इस मूल्य में वृद्धि के बारे में अभ्यावेदन प्राप्त हुये हैं। सामना विचाराधीन है। इन अभ्यावेदनों पर अन्त ही निर्णय लिया जाएगा।

कृषि अनुसन्धान केंद्र

1543. श्री मोहन स्वरूप : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) देश में इन समय कितने कृषि अनुसन्धान केंद्र चल रहे हैं;

(ख) कृषि मंत्रालय द्वारा इस बात को सुनिश्चित करने के लिये क्या कार्यवाही की जा रही है कि इन केंद्रों में अनुसन्धान के द्वारा

निकाले गये कृषि के तरीकों से किसानों को जल्दी से जल्दी अवगत कराया जाय; और

(ग) खेती को उन्नत बनाने की दिशा में अनुसन्धान कार्यों से क्या लाभ पहुंचा है ?

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में राज्य-मंत्री (श्री अन्नासाहिब शिन्डे) : (क) देश में लगभग 540 कृषि अनुसन्धान केंद्र हैं।

(ख) अनुसन्धान प्रयोगशालाओं तथा परीक्षण केंद्रों में विकसित की गई नई तकनीकों को खेतों में अपनाने हेतु विस्तार कार्यक्रमों तथा किसानों को नए तरीकों तथा तकनीकों में अवगत करने के लिए कदम उठाए गए हैं। वैज्ञानिक उन राष्ट्रीय प्रदर्शनों में सहयोग दे रहे हैं जो समस्त देश में किए जा रहे हैं और जिन के द्वारा अनुसन्धान में निकाले गए परिणामों को किसानों के खेतों में अपनाया जा रहा है। इसके अनिर्दिष्ट केंद्रीय अनुसन्धान संस्था तथा कृषि विश्वविद्यालय नियमित रूप से "किसानों के दिन" संगठित करते हैं और किसानों के लिए प्रशिक्षण सम्बन्धी छोटे कोर्स चलाते हैं। यह कार्यक्रम बहुत प्रभावशाली सिद्ध हो रहा है।

(ग) विभिन्नतायें हाल के वर्षों में देश में कृषि उत्पादन को उन्नत करने में भारतीय वैज्ञानिकों ने असाधारण प्रसदान दिया है। मक्की, ज्वार और बाजरा की अधिक उपज वाली किस्मों का विकास और गेहूँ तथा चावल की लघु, नान-पीचिंग किस्म देश में महत्वपूर्ण सिद्ध हो रही हैं। इन नई किस्मों तथा संकरज द्वारा जो हमारे किसानों तथा खेती को अधिक उन्नत बनाने में महत्व रखते हैं अत्यन्त-निर्भर होने के लिए अधिक उपज वाली किस्म कार्यक्रम को चलाना अब सम्भव हो सका है।